

# डॉ. बिल मौस, पर्वत पर उपदेश, व्याख्यान 14, मत्ती 7:1-6, न्याय न करें

© 2024 बिल मौस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. बिल मौस द्वारा माउंट पर उपदेश देते हुए दिया गया उपदेश है। यह सत्र 14 है, मैथ्यू 7:1-6। न्याय न करें।

डेविड ने ब्रेक के दौरान एक दिलचस्प टिप्पणी की, और मैं बस इसे साझा करना चाहता था।

वह सोच रहा था कि क्या श्लोक 34 हमें आज हमारी रोज़ की रोटी दो या हमें कल की रोटी दो, एक दिन में एक बार के अनुवाद को प्रभावित करेगा। मुझे नहीं लगता कि यीशु इस समय प्रभु की प्रार्थना के बारे में सोच रहा था। यह बहुत दूर चला गया है।

लेकिन यह दिलचस्प है कि 34 का ध्यान वर्तमान पर केंद्रित रहने, दिन पर केंद्रित रहने और आने वाले कल से निपटने पर है। धर्मशास्त्रीय रूप से, मुझे लगता है कि यह एक बहुत मजबूत तर्क होगा कि प्रभु की प्रार्थना में, हमें वह भोजन दें जिसकी हमें आज आवश्यकता है। अगर हम प्रार्थना कर रहे होते, हमें वह भोजन दें जिसकी हमें कल आवश्यकता है, तो यह श्लोक 34 के विपरीत होता।

मैं यह नहीं कहना चाहता कि यह ऐसा ही होना चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही दिलचस्प तर्क है। धार्मिक दृष्टि से, हम वर्तमान में रहते हैं। मैं हमेशा पाता हूँ कि हमें आज का दिन हमारी दैनिक रोटी देना तीसरी दुनिया के देशों की तुलना में कहीं अधिक सार्थक है जहाँ प्रार्थना केवल अंतिम समय तक चलती है।

कुल मिलाकर, इस के पहले भाग पर ध्यान इस बात पर है कि हम दूसरे लोगों से कैसे संबंध रखते हैं। अंतिम भाग निष्कर्ष है, लेकिन यह इस बात पर है कि हम एक दूसरे से कैसे संबंध रखते हैं। पहला विषय न्याय है, श्लोक 1 से 6, हम एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। न्याय न करें। शायद यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि हम आलोचनात्मक भावना के मुद्दे से शुरू करते हैं।

जो व्यक्ति अध्याय 5 और 6 को नहीं समझता है, उसके लिए दूसरों की आलोचना करना स्वाभाविक बात है। लेकिन अगर आप आनंदित व्यक्ति हैं, तो अध्याय 7, श्लोक 1 समझ में आता है। या दूसरे शब्दों में कहें, अगर आप अपने लोगों से कहते हैं कि आलोचना मत करो, तो आपको भी वही परिणाम नहीं मिलेगा जो मुझे मिला।

तो, आपको वापस जाना होगा और गोल्डन चैन से शुरू करना होगा। और जब आप उससे गुजरेंगे, तो 7.1 एक समझ में आने वाली चीज़ होगी। जाहिर है, आप जानते हैं कि मैं क्रिटिकल स्पिरिट्स के बारे में क्या सोचता हूँ।

मैंने इसे कई बार उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल किया है। मुझे लगता है कि आलोचनात्मक भावना धीरे-धीरे, धैर्यपूर्वक चर्च के ढांचे में अपना रास्ता चुनती है। डॉन कार्सन ने लॉर्ड्स पर अपनी किताब, माउंट पर उपदेश में लिखा है कि कुछ लोग इतने आलोचनात्मक होते हैं कि वे हर रविवार दोपहर के भोजन में भुना हुआ उपदेशक खाते हैं।

मेरा जीवन बहुत बढ़िया रहा। रोस्ट प्रीचर। आप जानते हैं, शैतान को आलोचनात्मक भावना पसंद है।

जब कोई चर्च आलोचनात्मक हो जाता है, और वह चर्च के ढांचे को खा जाता है, और अनुग्रह को बाहर धकेल देता है, तो उस आराधनालय के लिए अनुग्रह में वापस जाना, फिर से अनुग्रह का स्थान बनना लगभग असंभव है। मेरा मतलब है, एक बार जब आलोचनात्मक भावना हावी हो जाती है, तो मुझे लगता है कि इससे छुटकारा पाना लगभग असंभव है। तो, इसका क्या मतलब है? न्याय न करें।

खैर, मेरे पास तीन संभावित स्थितियाँ हैं। पहली व्याख्या पूरी तरह से गलत है, लेकिन हम अपने गैर-ईसाई मित्रों से हमेशा यही सुनते हैं। हमें बताया जाता है कि न्याय न करने का मतलब है कि आपको एक रायहीन, रीढ़विहीन, कमज़ोर, इच्छाधारी जेलीफ़िश होना चाहिए।

न्याय न करें। आप जानते हैं, बाइबल कहती है कि न्याय न करें। आप मेरा न्याय न करें।

और बेशक, यह एक असंभव व्याख्या है, भले ही हमें कितनी बार बताया गया हो कि इसका वास्तविक अर्थ यही है। पूरे पहाड़ी उपदेश में, हमें निर्णय लेने के लिए कहा गया है। हमारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों से बढ़कर होनी चाहिए।

न्याय की प्रक्रिया चल रही है। हमारी धर्मपरायणता फरीसियों की तरह दिखावटी और आत्मसंतुष्ट नहीं होनी चाहिए। इसमें न्याय शामिल है।

7:15 में वह कहेगा, झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो। इसमें न्याय शामिल है। नातान ने राजा दाऊद का न्याय किया।

1 यूहन्ना 4:1, आत्माओं का परीक्षण करें। 1 कुरिन्थियों 5 में पौलुस ने यौन अनैतिक व्यक्ति पर निर्णय सुनाया। इसलिए, ऐसा कोई तरीका नहीं है कि 7:1 का मतलब सिर्फ यह है कि आप और मैं किसी भी चीज़ के बारे में राय नहीं रख सकते। न्याय का हमारे ईसाई जीवन से कोई लेना-देना नहीं है।

इसका मतलब यह नहीं हो सकता। इसलिए, व्याख्या संख्या एक, यह संभव नहीं है। व्याख्या संख्या दो, और मुझे यह शब्द मार्टिन लॉयड-जोन्स से मिला, और वह है कि आलोचना न करें।

अब, जब मैं मूल रूप से धर्मोपदेश श्रृंखला पर काम कर रहा था, तो मैंने जो भी टिप्पणी पढ़ी, उसमें निंदात्मक शब्द का इस्तेमाल किया गया था। मुझे नहीं पता कि इस शब्द का क्या मतलब है। मैंने इसे अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था।

सच कहूँ तो, तारीखों को देखकर मुझे लगता है कि उन्होंने यह सब मार्टिन लॉयड-जोन्स से सीखा है। इस शब्द का अर्थ है दोष ढूँढना, गंभीर रूप से आलोचनात्मक होना और निर्णय लेना। यह अधिकार की स्थिति ग्रहण करना है जहाँ हम दूसरे व्यक्ति के बारे में निर्णय ले सकते हैं।

इस व्याख्या के अनुसार, यीशु कह रहे हैं कि चर्च में और हमारे निजी जीवन में आलोचना करने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं इसे इस तरह से कहूँगा कि, दोष खोजने का आनंद लेने का कोई समय नहीं है। क्योंकि, आप जानते हैं, हमारे जीवन में आलोचना करने वाले लोग, अनियमित लोग, उन्हें यह पसंद है।

इससे उन्हें शक्ति का अहसास होता है, है न? और दोष ढूँढने, विनाशकारी होने और दूसरे व्यक्ति की निंदा करने का आनंद लेने का समय नहीं है। क्योंकि, आखिरकार, यही परमेश्वर की भूमिका है, है न? यह परमेश्वर की भूमिका है, पवित्र आत्मा को दुनिया को उनके पाप के लिए दोषी ठहराना है। प्रतिशोध को अंजाम देना परमेश्वर पिता की भूमिका है।

और यह सब गपशप है, है न? यह प्रतिशोध को अंजाम देना है। यह बस एक अलग तरह का है। आलोचना करने और, बेहतर शब्द के अभाव में, चीजों के बारे में समझदारी से काम लेने में बहुत अंतर है।

इसलिए, एक निंदक व्यक्ति को गलतियाँ ढूँढने में मज़ा आता है। एक समझदार व्यक्ति ज़रूरत पड़ने पर गलतियाँ देखता है। एक निंदक व्यक्ति विनाशकारी होता है और चीजों को तोड़ता-मरोड़ता है।

एक समझदार व्यक्ति रचनात्मक होना चाहता है और चीजों का निर्माण करना चाहता है। एक निंदक व्यक्ति निर्णय देने में कठोर होता है। एक समझदार व्यक्ति अनुग्रह और सत्य के बीच संतुलन बनाने में दयालु होता है।

तो, दूसरी व्याख्या, जिसे ज़्यादातर टीकाएँ मानती हैं, वह यह है कि यीशु कह रहे हैं, आलोचना करने वाले मत बनो, दोष खोजने वाले व्यक्ति मत बनो। इसका मतलब यह नहीं है कि आप विवेकशील नहीं हो सकते, लेकिन इसका मतलब यह है कि दोष खोजने वाले मत बनो। इस उपदेश को लिखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में एक तीसरा विकल्प भी है।

और तीसरा विकल्प यह है कि यीशु का मतलब बिल्कुल वही है जो वह कहता है। न्याय न करें। और मैं शायद यह भी जोड़ना चाहूँगा कि वह किसी व्यक्ति का न्याय करने की बात कर रहा है।

किसी व्यक्ति का न्याय न करें। इसमें मुझे लगभग दस मिनट लगेंगे, लेकिन मैं आपको समझाता हूँ कि मुझे क्यों लगता है कि यहाँ यही हो रहा है। मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है जो अपनी यात्रा पर है, और वह आलोचनात्मक कट्टरवाद की स्थिति से आगे बढ़कर यह समझ रहा है कि ईश्वर से सच्चा प्यार करने और एक-दूसरे से प्यार करने का क्या मतलब है।

वह इसी यात्रा पर हैं। और वह पूछ रहे थे कि क्या मैं ग्रेग बॉयड द्वारा लिखी गई पुस्तक रिपेंटिंग ऑफ रिलिजन पढ़ूंगा। ग्रेग बॉयड मिनेसोटा में पादरी हैं।

ग्रेग असली लोकप्रिय समर्थक हैं और ईश्वर की खुलेपन की बात पर जोर देते हैं, जो यह सिद्धांत है कि ईश्वर भविष्य नहीं जानता। अगर ईश्वर भविष्य जानता है, तो चुनाव की कोई स्वतंत्रता नहीं है। कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है।

और चूंकि ऐसा होना चाहिए, यह एक बहुत बड़ा सरलीकरण है, क्योंकि स्वतंत्र इच्छा होनी चाहिए, भगवान भविष्य नहीं जान सकते। खैर, यह एक बहुत ही गलत स्थिति है। मेरी अपनी मानसिकता है, मैं कभी भी बॉयड द्वारा लिखी गई कोई भी चीज़ नहीं पढ़ने जा रहा हूँ।

कुछ बहसों ऐसी होती हैं जिन पर समय बिताना भी बेकार है। और फिर मेरे दोस्त ने आकर कहा, बॉयड की धर्म के पश्चाताप पर लिखी किताब उनके जीवन की सबसे अच्छी पाँच किताबों में से एक है। यह एक बदलाव लाने वाली किताब थी।

और मैंने सोचा, वह वाकई एक अच्छा दोस्त है। तो मैंने कहा, ठीक है, मैं इसे पढ़ूंगा। किताब बहुत ही दिलचस्प है।

और मैं वास्तव में यह सलाह दूंगा कि आप अपने डीकन और अपने बुजुर्गों के साथ बैठकर धीरे-धीरे इस पुस्तक को पढ़ें। इस तथ्य को भूल जाइए कि बॉयड भविष्य के बारे में कुछ ऐसा मानता है जो वास्तव में बहुत गलत है। बस पुस्तक को खुद के लिए बोलने दें।

किताब की शुरुआत थोड़ी उलझन भरी है। पहले कुछ अध्याय ऐसे हैं... लेकिन वह जो कर रहा है वह अच्छाई और बुराई के ज्ञान के पेड़ के बारे में बात कर रहा है। और वह जो बात कह रहा है वह यह है कि यह भगवान का पेड़ है।

भगवान तय करते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। भगवान तय करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत। यही अच्छाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का प्रतीकात्मक अर्थ है।

वह इसे आधार बनाकर यह तर्क देता है कि समस्या यह है कि हम परमेश्वर की... एक ही चीज़, एक ही व्यक्ति को स्वीकार नहीं करना चाहते। हम परमेश्वर की सही और गलत की परिभाषा को स्वीकार नहीं करना चाहते। क्योंकि उत्पत्ति 3 में यही हुआ था, है न? हव्वा और आदम ने तय किया कि सही और गलत की उनकी परिभाषाएँ अलग-अलग हैं।

और इसलिए वे उसका अनुसरण करना चाहते थे। और उनका कहना है कि चर्च यही करता है। तो फिर मैं पुस्तक के अंतिम अंश का सारांश प्रस्तुत करता हूँ।

वह कहते हैं, हमें एक दूसरे से प्रेम करने के लिए बुलाया गया है। यह बहुत सरल है। सबसे बड़ी आज्ञा, सबसे बड़ी दो आज्ञाएँ।

ईश्वर से प्रेम करो, एक दूसरे से प्रेम करो। इसके बजाय, हम एक दूसरे पर निर्णय थोपते हैं। और हम यह कैसे करते हैं, यह यहाँ बताया गया है।

वह अंत तक ऐसा नहीं कहता, लेकिन जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप उसे क्षमा कर रहे होते हैं। पापों का एक समूह है जिसे हमने ठीक माना है। मुझे लगता है कि मैंने पहले भी इसका उल्लेख किया है।

हमने तय किया है कि हम अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष को फिर से परिभाषित करेंगे। कुछ पाप ऐसे हैं जिन्हें हमने ठीक माना है। ओह, ये वही पाप हैं जो मैं करता हूँ।

ऐसे पापों का एक समूह है जो ठीक नहीं है। डेव यही पाप करता है। इसलिए, डेव से प्यार करने के बजाय, हम डेव पर निर्णय सुनाते हैं।

और प्रेरणा यह है कि इससे मुझे लगता है कि मैं डेव से बेहतर हूँ। आपको किताब का वह बिंदु समझ में आ गया, मैं गया। यह बहुत स्पष्ट है, यह बहुत स्पष्ट है, और यही होता है। आप एक अनियमित व्यक्ति को सड़क पर जाते हुए देखते हैं। आप क्या करते हैं? इंसान को क्या करना चाहिए? ओह, वे मुझसे भारी हैं।

या फिर वे उतने नहीं हैं जितना मैं हूँ। ओह, मैं उनसे बेहतर हूँ क्योंकि वे वैसे हैं, और मैं ऐसा हूँ। ठीक है? मेरा मतलब है, यह मानवीय स्थिति है।

हम अपने बारे में बेहतर महसूस करने के लिए उन पापों पर निर्णय देते हैं जिन्हें हम अस्वीकार्य मानते हैं। अब, पुस्तक के अंत में वे कहते हैं, मेरा मानना है कि दो परिस्थितियाँ हैं जिनमें हम निर्णय देते हैं। सबसे महत्वपूर्ण वह है जब आपका किसी ऐसे व्यक्ति से रिश्ता होता है जो आपसे किसी पाप के बारे में बात करता है, कि वास्तव में कुछ हो सकता है।

देखिए, क्योंकि अगर मैं डेव के पास जाता हूँ, और मैं उस शर्ट को पहनने के उसके पाप के बारे में उससे पूछता हूँ, तो हमारे पास, ठीक नहीं है। जाहिर है, आप उसे चुन सकते हैं; मेरा वास्तव में कोई रिश्ता नहीं है। मैं सेठ और डायलन के प्रति उसके प्यार को देख सकता हूँ, और मैं कह सकता हूँ, ठीक है, यह बस है, और मेरा वास्तव में ऐसा कोई रिश्ता नहीं है जहाँ सेठ को उसके पाप के बारे में बताने से कोई सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। सही? मेरा मतलब है, अगर सेठ के जीवन में कुछ गंभीर रूप से गलत था, तो मैं वास्तव में यह जानने की स्थिति में नहीं हूँ कि, ठीक है, उसने ऐसा क्यों किया? ऐसी कौन सी ताकतें हैं जिन्होंने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया? उसका सफर कैसा रहा है? क्या वह बेहतर हो रहा है या नहीं? मेरा वास्तव में सेठ के साथ ऐसा कोई रिश्ता नहीं है जहाँ मैं बैठ सकूँ और उसके चारों ओर अपनी बाँह रख सकूँ और उसके साथ रो सकूँ और कह सकूँ, तुम्हारे जीवन का यह हिस्सा बस मेरा दिल खा रहा है, और मुझे डर है कि यह तुम्हें चोट पहुँचा रहा है।

इसलिए अगर आपका कोई रिश्ता है, और बाइबल में इसके उदाहरण हैं, अगर आपका ऐसे लोगों के साथ रिश्ता है जहाँ आलोचना और टकराव होता है, तो आप कभी भी अच्छे दोस्त के साथ इन शब्दों का इस्तेमाल नहीं करेंगे, है न? अगर सेठ और मैं ठीक-ठाक थे, अगर डेव का

सेठ के साथ कोई सौदा था, तो वह कभी नहीं कहेगा, मैं तुम्हारा सामना करने जा रहा हूँ। वह कभी नहीं कह सकता, मैं तुम्हारा न्याय करने जा रहा हूँ। वह कह सकता है, सेठ, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, और तुम्हारे जीवन में ऐसा व्यवहार देखकर मुझे वाकई दुख होता है।

मुझे लगता है कि यह विनाशकारी है। क्या हम इसके बारे में बात कर सकते हैं? और बॉयड जो कहते हैं वह वैध है। दूसरी दिलचस्प बात जो उन्होंने कही है, और यह मैथ्यू 24 और फरीसियों के प्रति यीशु के सामान्य दृष्टिकोण पर आधारित है, वह यह है कि जब कोई व्यक्ति चर्च में अधिकार के उच्च पद पर होता है, तो उसके पाप के प्रभाव बहुत बड़े समूह के लोगों पर विनाशकारी प्रभाव डालते हैं, और फिर बॉयड कहेंगे, यह नियम का दूसरा अपवाद है, कि आगे बढ़ने और सामना करने का एक तरीका होना चाहिए।

तो, 1 कुरिन्थियों 5 में पॉल ने अपनी सौतेली माँ के साथ सोने वाले व्यक्ति का सामना किया। चर्च को इस पर गर्व था। यह चर्च के लिए विनाशकारी था, और इससे निपटना था। बेशक, पॉल एक प्रेरित है, इसलिए मेरा मानना है कि उसके पास नियमों का एक अलग सेट है।

उसके पास कुछ विशेषाधिकार हैं जो मेरे पास नहीं हैं, क्योंकि मैं कोई प्रेरित नहीं हूँ। लेकिन ये दो अपवाद हैं जो बॉयड ने दिए हैं। मैंने बेन विदरिंगटन को देखा है।

वैसे, बेन विदरिंगटन यहाँ आ रहे हैं। आप ज़रूर आँ। बेन को देखना मज़ेदार है।

वे वैकूवर में एक सम्मेलन में बोलने आए थे, और मुझे उनकी बातें सुनने का मौका मिला। वे मसीह की मानवता के बारे में बात कर रहे थे, खास तौर पर उस प्रसंग के बारे में, जिसमें महिला उनके वस्त्र के किनारे को छूती है और पूरी तरह से स्वस्थ हो जाती है।

और यीशु ने कहा, मुझे किसने छुआ? और उसने एक तरह से शुरुआती प्रोफेसरीय रुख अपनाया। और वह कहता है, आपको क्या लगता है कि यीशु का क्या मतलब था जब उसने कहा, मुझे किसने छुआ? इसका वास्तविक अर्थ और महत्व क्या था? शायद। शायद यीशु का मतलब था, मुझे किसने छुआ? शायद इसका मतलब वही है जो लिखा है।

तो, आपको क्या लगता है कि जब यीशु कहते हैं, न्याय न करें, तो उनका क्या मतलब है? ओह, मुझे नहीं पता। शायद उनका मतलब है, न्याय न करें। हाँ, परिस्थितियाँ होंगी, अपवाद होंगे, विरल, कम और बीच-बीच में।

मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। सच में।

लेकिन वह एक आलोचनात्मक व्यक्ति हैं। वह एक आलोचनात्मक व्यक्ति हैं। कुछ समय पहले, मैंने कहा था, मेरे पास आपके लिए एक सवाल है।

खैर, उन्होंने कुछ ऐसा कहा कि मुझे अपनी राय रखने का अधिकार है। और मैंने इसे कुछ दिनों तक अपने दिमाग में ही रहने दिया। और मैं उनके पास वापस आ गया।

मेरी पत्नी ने मुझे सिखाया कि समय ही सबकुछ है। कभी-कभी, आप तुरंत कुछ नहीं कह सकते।

कभी-कभी आपको थोड़ा इंतज़ार करना पड़ता है। इसलिए मैंने कुछ दिन इंतज़ार किया और कहा, मेरे पास आपके लिए एक सवाल है। आपको क्यों लगता है कि आपको राय रखने का अधिकार है? वह सवाल से खुश नहीं थे।

मैंने हाल ही में दूसरे संदर्भ में यह सवाल पूछा था और मुझे लगता है कि मेरे कुछ दोस्तों ने मुझ पर मौखिक हमला किया। आपको क्यों लगता है कि आपको अपनी राय रखने का अधिकार है? मेरा मतलब है, जिस उत्साह से मुझे बताया गया कि उन्हें किसी भी चीज़ के बारे में कोई भी राय रखने का अधिकार है, वह ऐसा था, वाह, मैं बस यही चाहता हूँ कि हम सभी उसी उत्साह से यीशु से प्यार करें। तो, मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आपको अपनी राय रखने का अधिकार है? किसी व्यक्ति के बारे में।

मैं राजनीति की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं किसी धार्मिक चीज़ की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं एक व्यक्ति की बात कर रहा हूँ।

क्या हमें किसी व्यक्ति के बारे में राय रखने का अधिकार है? देखिए, किसी व्यक्ति के बारे में राय रखने के लिए आपको निर्णय देना होगा। निर्णय देने के लिए आपको पूरी जानकारी होनी चाहिए। है न? अगर आपको पूरी जानकारी नहीं है, तो आप किसी व्यक्ति के बारे में निर्णय नहीं दे सकते।

क्या मैंने आपको अपने परिवार के ज़्यादा वज़न को लेकर चिंता के बारे में बताया है? माउंट्स परिवार में पाप ज़्यादा वज़न होना है। मैं अपने परिवार के लिए शर्मिंदगी का कारण हूँ। मेरे परिवार में, मेरा वज़न ज़्यादा है।

और यह बस यही है... मुझे नहीं पता। यह बस निराशाजनक है। और मैंने इसे उठा लिया।

मैं इसी सोच में पला-बढ़ा हूँ कि किसी भी स्तर पर मोटा होना सबसे बुरी चीज़ों में से एक है जो आप कर सकते हैं। और रॉबिन और मैं वॉशिंगटन में एक स्टोर पर थे। और चेकर मोटी नहीं थी, लेकिन उसका वजन काफी ज़्यादा था।

और रॉबिन मेरे चेहरे पर यह देख सकती थी। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह मेरे चेहरे पर यह देख सकती थी। मैं निर्णय दे रहा था।

और वह बहुत अच्छी चेकर नहीं थी। वह कुछ हद तक असभ्य थी। इसलिए, हम इमारत से बाहर चले गए, और रॉबिन ने बस इतना कहा, शायद उसने पहले ही 100 पाउंड वजन कम कर लिया है।

हो सकता है कि उसके पति ने आज सुबह उसे छोड़ दिया हो। हो सकता है कि उसके साथ बचपन में दुर्व्यवहार हुआ हो, और बहुत सी लड़कियाँ जो दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं, वे फिर से दुर्व्यवहार न होने के प्रयास में खुद को अस्वीकार्य बनाने की कोशिश करती हैं, और इसलिए उनका वजन बहुत बढ़ जाता है। हो सकता है कि उसके साथ बचपन में दुर्व्यवहार हुआ हो।

उसने और कुछ नहीं कहा। हम बस कार की तरफ़ बढ़े, और मैंने कहा, "मुझे अभी-अभी धक्का लगा है।"

क्योंकि, देखिए, उसे देखने और मोटा होने के लिए, जो कि, सबसे पहले, पृथ्वी पर सबसे बड़ा पाप नहीं है। इस मामले में मेरा परिवार गलत है। लेकिन देखिए, उस चेकर के बारे में एक राय रखने के लिए भी, मुझे उसे वास्तव में जानना होगा।

उसने कितना कुछ खोया है। उसकी पारिवारिक स्थिति क्या है? वह कौन सा दर्द है जो उसे अपने शरीर को चोट पहुँचाने पर मजबूर करता है? है न? मुझे यह सब नहीं पता। हममें से कोई भी नहीं जानता।

ब्रूस वाल्टके आए और उन्होंने नीतिवचन पर यह क्लास ली। यह बीटी पर उपलब्ध है। यह एक शानदार क्लास है।

और वह जो बात कहते हैं वह यह है कि आप ऐसा नहीं कर सकते... मुझे उनके शब्दों को सही से समझने दीजिए। आप ऐसा नहीं कर सकते... मुझे कोई शब्द याद नहीं आ रहा। जब तक आपके पास सार्वभौमिक ज्ञान नहीं होगा, तब तक आप किसी चीज़ के सही और गलत होने के बारे में घोषणा नहीं कर सकते।

किसी चीज़ को निश्चित रूप से जानने का एकमात्र तरीका सार्वभौमिक ज्ञान होना है। क्योंकि अगर हमारे पास सार्वभौमिक ज्ञान नहीं है, अगर हमारे पास अधूरा ज्ञान है, तो हमारे पास किसी एक विशिष्ट चीज़ पर निर्णय देने के लिए पर्याप्त ज्ञान नहीं है। और इसलिए, उनका कहना है कि केवल ईश्वर के पास सार्वभौमिक ज्ञान है।

केवल परमेश्वर के पास ही पूर्ण ज्ञान है। शायद यीशु का मतलब था कि हमें न्याय नहीं करना चाहिए। हाँ, ऐसे दुर्लभ अपवाद हैं जब हम किसी रिश्ते में होते हैं या जब चर्च के नेतृत्व का सुसमाचार में इतने सारे लोगों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ने वाला होता है कि कुछ करना पड़ता है।

कभी नहीं क्योंकि हम ऐसा करना चाहते हैं। कभी नहीं क्योंकि हमें इसमें आनंद आता है। कभी नहीं क्योंकि इससे हमें अपने बारे में अच्छा महसूस होता है क्योंकि हम वह पाप नहीं करते, हालाँकि हम अन्य पाप करते हैं।

शायद यीशु का मतलब है कि ऐसा मत करो। हमें आत्माओं का परीक्षण करना है। हम बहुत जल्दी अपवादों पर चले जाते हैं।

दूसरा उदाहरण जिसका मैं जिक्र कर रहा था, वह व्यक्ति एक महिला थी। वह सभी अपवादों पर चली गई। हमें आत्माओं का परीक्षण करना है। और यह ऐसा था, जैसे कि मेरी पत्नी का परिवार कहता है, एक लाल ले लो।

थोड़ा उदास हो जाओ। बस एक पल के लिए शांत हो जाओ। लेकिन उसके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण था कि वह निर्णय लेने में सक्षम हो।

और मुझे लगता है कि यही हमारा चर्च है। मुझे लगता है कि यह एक संपूर्ण चर्च है। हमें एक दूसरे से प्रेम करने के लिए बुलाया गया है।

यूहन्ना 17 में कहा गया है कि अगर हम एक दूसरे से प्यार करते हैं, तो लोग जानेंगे कि परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को भेजा है। यही बात दांव पर लगी है। इसके बजाय, हम एक दूसरे को चबाते और थूकते हैं।

चर्च खुद का सबसे बड़ा दुश्मन है। गपशप चर्च की स्वाभाविक भाषा है। और यह तब नहीं था जब हम चर्च की स्थिति से गुज़रे थे, यह पहली बार था जब मैंने वास्तव में ऐसा अनुभव किया था।

लेकिन जैसा कि मैंने लोगों से बार-बार कहा है, यह हम सभी के लिए है, अगर आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो यह होने वाला है। यह आपके साथ होगा। यह चर्च की प्रकृति है।

जब मैं ज़ोंडरवन गया और मैंने कहा, अरे, मैं एक किताब लिखने जा रहा हूँ। जब आप बचाए गए लोगों से लड़ सकते हैं तो खोए हुए लोगों को क्यों बचाना? और मैंने कहा, मैं 30 चर्चों के केस स्टडी करना चाहता हूँ जो टूट गए थे और फिर फिर से मिल गए थे। 10 चर्च घमंडी पादरियों द्वारा तोड़े जाने वाले थे, 10 चर्च घमंडी बुजुर्गों द्वारा तोड़े गए थे, और 10 चर्च गपशप करने वाले लोगों द्वारा तोड़े गए थे।

मुझे लगा कि यह एक दिलचस्प केस स्टडी हो सकती है। जब मैंने इसके बारे में और सोचा, तो मैंने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं 30 स्वस्थ चर्च ढूँढ पाऊंगा या नहीं।" मैंने ज़ोंडरवन के सभी वरिष्ठ कर्मचारियों से बात की।

पता चला कि उनमें से लगभग सभी पादरी थे जिन्हें चबाकर बाहर थूक दिया गया था। और वे इस बात पर सहमत थे कि शायद आपको 30 चर्च ऐसे न मिलें जो मुश्किल हालात से गुज़रे हों और मज़बूती से उभरे हों। इसलिए, मैंने कहा, ठीक है, मेरे पास काम करने के लिए दूसरी चीज़ें हैं।

मैं ऐसा नहीं करूँगा। तो, जाहिर है, यह कुछ ऐसा है जिसे मैं कहने की हिम्मत नहीं करूँगा, लेकिन यह मेरे रहने के स्थान के बहुत करीब है। आप क्या सोचते हैं? निश्चित रूप से, इसका मतलब है कि आलोचना न करें।

लेकिन मैं जिन लोगों को जानता हूँ, वे यह नहीं सोचते कि वे आलोचक हैं। वे पूरी तरह से उचित हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वे सही हैं। मुझे अभी भी चर्च से गुजरते हुए याद है।

मैं कभी-कभी आराधना के समय में, रविवार के स्कूलों में घूमता रहता था और उनके लिए प्रार्थना करता था और इस तरह की अन्य चीज़ें करता था। और मैं बाहर निकल रहा था, प्रचार करने के लिए तैयार हो रहा था, और एक लड़की, जो एक महिला थी, अचानक मुझ पर टूट पड़ी। उसे मेरा कुछ काम पसंद नहीं आया।

मैंने कहा, मुझे खुशी है कि मैंने आपसे इस बारे में बात की, लेकिन क्या हम इसे मेरे उपदेश के बाद कर सकते हैं? और वह पूरे चर्च में मेरे पीछे-पीछे चली गई, मुझ पर चिल्लाती रही। वह मेरे बारे में आलोचनात्मक और आलोचनात्मक होने के लिए बाध्य और दृढ़ थी, और वह मुझे अपना उपदेश पूरा करने नहीं देना चाहती थी। वे कहते हैं कि हमारे जीवन में सामान्य लोग होते हैं, है न? तो, इसका निश्चित रूप से मतलब है कि यह निंदनीय है।

मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि ऐसा न करें, जब तक कि आपको ऐसा करना बिल्कुल ज़रूरी न हो। एक-दूसरे के साथ कृपा और दया से पेश आएं। इस शब्द का इस्तेमाल दो अन्य शब्दों के साथ मिलकर किया जाता है।

रोमियों 14:3 में इसका इस्तेमाल किसी का अपमान करने के साथ किया गया है। क्या आप किसी का अपमान कर रहे हैं? हाँ। और उस 0 में x का मतलब है किसी का अपमान करना।

लूका 6 का प्रयोग निंदा के साथ किया जाता है। निंदा। पहला शब्द, मुझे खेद है।

आत्म-अवमानना? किसी को तिरस्कार में रखना। हाँ, किसी को तिरस्कार में रखना। NIV इसे इसी तरह से प्रस्तुत करता है।

और इसलिए, मेरे लिए, न्याय करना किसी का मूल्यांकन करना, उन्हें तिरस्कार में रखना, या उन्हें आत्म-तिरस्कार करना होगा, न कि उन्हें बदनाम करने के लिए पकड़ना। हाँ, किसी का न्याय करना और परिणामस्वरूप, उन्हें दूर रखना। न्याय करना, किसी का तिरस्कार करना।

हाँ। मुझे आश्चर्य है कि हम कितने लोगों के बारे में सहज रूप से निर्णय दे देते हैं, कि उनकी कोई पिछली कहानी है जो इतनी सम्मोहक और इतनी मजबूत है, और अगर हमें यह पता होता, तो हम ऐसा नहीं करते और ऐसा नहीं सोचते जो हम करते हैं। मैं कल रात चैनल बदल रहा था, और मैंने एक ऐसे व्यक्ति पर एक वृत्तचित्र देखा जिसका वजन 900 पाउंड है।

वह मुश्किल से बैठ पाता है। उसके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि चर्बी हर जगह जमा जाती है। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा।

और मैं बस यही सोचता हूँ, आपके जीवन में ऐसा कौन सा दर्द, ऐसा कौन सा घाव था कि आपने उसका इलाज इस तरह से किया? और मुझे उसके लिए बहुत बुरा लगा। और मुझे लगता है कि हमारी प्रतिक्रिया भी यही होनी चाहिए। निर्णय सुनाना और इस तरह उनके जीवन को प्रभावित करना।

हाँ। मोटे लोगों का बचाव करने का कोई कारण नहीं है। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कह रहा हूँ।

हाँ, ये सभी तरह के होते हैं। ये आनुवंशिक होते हैं। जब आपके पेट पर चर्बी जमा हो जाती है, तो पुरुषों में एस्ट्रोजन-प्रकार का हार्मोन बनता है, जो स्वस्थ रहना मुश्किल बनाता है।

इससे समस्या और भी बढ़ जाती है। ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो होती रहती हैं। हाँ, और मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जो अधिक वजन वाले हैं और दिन में तीन बार सलाद खाते हैं।

बस मुझे गोली मार दो। मुझे सलाद से नफ़रत है। मुझे सलाद से नफ़रत है।

सलाद सिर्फ़ तभी अच्छा लगता है जब उसमें फ़्राइड चिकन या कुछ और हो। लेकिन हाँ। और मैं बस इसका इस्तेमाल कर रहा हूँ, यह मेरी यात्रा का हिस्सा रहा है और मुझे लगता है कि यह एक ऐसा रवैया है जिसका इस्तेमाल भगवान ने मुझे आम तौर पर आलोचनात्मक भावना से निपटने में मदद करने के लिए किया।

खैर, ठीक है। खैर, आप सभी को सोचने के लिए कुछ है। मुझे पूरा यकीन है कि यह तीसरा है।

मुझे लगता है कि बॉयड सही है। किसी का न्याय न करें। और हमारे पास तीन कारण हैं कि हमें न्याय क्यों नहीं करना चाहिए।

नंबर एक यह है कि हमें ऐसा करने के लिए कहा गया है। यीशु ने कहा, बस ऐसा मत करो। ऐसा मत करो।

यही वह बात है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। दूसरा कारण पारस्परिकता का पूरा सिद्धांत है, है न? दूसरों का न्याय न करें, अन्यथा आप पर भी न्याय किया जाएगा। क्योंकि जिस तरह से आप दूसरों का न्याय करते हैं, उसी तरह आपका भी न्याय किया जाएगा।

फिर रूपक बदलकर वही बात कहते हैं। और जिस माप से आप हारते हैं, उसी से आपके लिए भी नापा जाएगा। फिर से, यह कोई लेन-देन नहीं है।

हम यह नहीं कह रहे हैं कि मैं लोगों के साथ एक खास तरीके से पेश आऊँगा ताकि वे मेरे साथ दूसरे तरीके से पेश आएँ। लेकिन यह दया और क्षमा के साथ-साथ यह भी कह रहा है कि किसी तरह से, आप जिस तरह से न्याय करते हैं, उसका असर आप पर ही पड़ेगा। उसी तरह से आप जिस तरह से दया दिखाते हैं और जिस तरह से क्षमा करते हैं, उसका असर भी आप पर ही पड़ेगा।

हम विश्वास से बचाए गए हैं। जो लोग मसीह यीशु में हैं, उनके लिए कोई दण्ड नहीं है। और फिर भी, परमेश्वर और दूसरों के साथ हमारा रिश्ता किसी न किसी तरह से इस बात से प्रभावित होता है कि हम कैसे न्याय करते हैं या नहीं करते हैं।

अब, वे प्रश्न जिन पर हमने पूरे प्रवचन में कभी-कभी विचार किया है, वे वास्तव में यहाँ सामने आते हैं। किसके द्वारा न्याय किया जाए और कब न्याय किया जाए। सही? किसके द्वारा न्याय किया जाए और कब न्याय किया जाए।

और मैं कहूँगा, सबसे पहले, इसका परिणाम निश्चित रूप से लोगों के लिए सही है कि अब आलोचनात्मक लोग आलोचना को आमंत्रित करते हैं। और अगर आप, अगर कोई भी, ऐसे

व्यक्ति हैं जो हमेशा मूल्यांकन करते हैं, हमेशा लोगों को नकारात्मक रूप से देखते हैं, हमेशा बिना मांगे सलाह मांगते हैं, जो कि छद्म आलोचना है, तो आश्चर्यचकित न हों अगर वे आपकी आलोचना करते हैं। यह बस ऐसा ही है।

अगर आप और मैं दूसरे लोगों की आलोचना करते हैं, तो वे भी अब हमारी आलोचना करेंगे। लेकिन दूसरी बात, मैं कहूंगा, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मुझे लगता है कि यह भगवान के लिए भी सच है। मेरा मतलब है, धर्मोपदेश में बहुत सारे निष्क्रिय शब्द ईश्वरीय निष्क्रिय शब्द हैं, है न? और इसलिए, आपको गंभीरता से यह मानना होगा कि जो न्याय कर रहा है और जो माप रहा है, वह वास्तव में भगवान है।

तो सवाल यह है कि यह कैसा दिखता है? और मेरे पास वर्तमान और भविष्य का उत्तर है। वर्तमान में, ईश्वर द्वारा न्याय किए जाने का मतलब है कि निंदक लोग, आलोचनात्मक लोग, अब ईश्वर द्वारा न्याय किए जाने वाले हैं, जिससे मुझे लगता है कि उनका मतलब है कि ईश्वर हमारे पाप के परिणामों को अपने ऊपर हावी होने देगा। ईश्वर, आप जानते हैं, फिरौन के दिल को किसने कठोर किया? फिरौन या ईश्वर? खैर, मुझे लगता है कि दोनों सात हैं।

हर बार सात। मुख्य बात यह है कि परमेश्वर ने दुनिया को इस तरह से बनाया है कि जब आप और मैं सक्रिय रूप से उसे अस्वीकार करते हैं, जब हम अपने दिलों को कठोर बनाते हैं, तो वह हमारे दिलों को भी कठोर बना देता है। इसलिए नहीं कि वह दिलों को कठोर बनाने में सक्रिय रूप से शामिल है।

क्योंकि हमने वास्तविकता को इसी तरह से काम करने दिया। पाप हमें एक सर्पिल में खींचता है, है न? और इसलिए चाहे यह ईश्वर का कठोर होना हो, लेकिन हो सकता है कि फिरौन के मामले में, उसने सक्रिय रूप से ऐसा किया हो। मुझे नहीं पता।

लेकिन मुझे लगता है कि ईश्वर अब निंदक लोगों का न्याय करता है, क्योंकि ईश्वर उनके पापों के परिणामों को अपने ऊपर हावी होने देता है। न्याय करने वाले और आलोचनात्मक लोग क्रोधित, कठोर लोग बन जाते हैं जो अपने आस-पास की अच्छाइयों को नहीं देख पाते। है न? और जिस मित्र का मैंने उल्लेख किया था कि वह अपनी राय रखता है, यह उसका जीवन है।

यह उस पर हावी हो गया है। वह वाकई एक अच्छा इंसान है, लेकिन उसकी आलोचनात्मक मानसिकता ने उसकी शादी को प्रभावित किया है।

इसने उनके बच्चों और मेरे साथ उनके रिश्ते को प्रभावित किया है। और यह बस नीचे की ओर जाने वाला चक्र है। और मुझे लगता है कि यह ईश्वर की आलोचनात्मक भावना पर उनका न्याय है।

इसलिए, मुझे लगता है कि अब निर्णय हो जाना चाहिए। पहाड़ी उपदेश के सामान्य रूप से जिस तरह से होने के कारण, मुझे लगता है कि, किसी तरह से, हमारा अंतिम निर्णय हमारी आलोचनात्मक भावना से प्रभावित होता है। लेकिन मुझे नहीं पता कि कैसे।

मैं इसके बारे में कुछ नहीं समझता। लेकिन मैं निश्चित रूप से समझता हूँ कि अब, अगर हम आलोचना करेंगे, तो हमें भी आलोचना का सामना करना पड़ेगा। दूसरे लोग भी हमें आलोचना का शिकार बनाएंगे और वे भी हमारी आलोचना करेंगे।

परमेश्वर हमारा न्याय करेगा। वह हमारे पापों के परिणामों को अपने ऊपर हावी होने देगा। इसका मतलब यह नहीं है कि वह बाद में हमें मुक्ति नहीं देगा।

हाँ? हाँ। हाँ। मुझे लगता है कि समस्या यह है कि अगर आप इसे आलोचना न करने के रूप में प्रचारित करते हैं, तो कोई भी यह नहीं सोचता कि वह आलोचना कर रहा है।

यह समस्या का एक हिस्सा है। यदि आप दरवाज़ा खुला छोड़ देते हैं, और साथ ही, मुझे नहीं लगता कि इसका यही मतलब है, लेकिन कुछ व्यावहारिक अनुप्रयोग मुद्दे हैं। यीशु पूरे उपदेश में नाटकीय भाषण का उपयोग करते हैं, है न? और उनका मतलब यह नहीं है कि अपवाद नहीं हैं।

तलाक मत लो। और यहाँ, खैर, पोर्निया को छोड़कर, हम 1 कुरिन्थियों 7 से जानते हैं कि एक और अपवाद है: त्याग। लेकिन वह इस बात को घर तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि जिस तरह से वह 7:1 में कहता है, वह है, ऐसा मत करो। यह इस वास्तविकता को नकारने के लिए नहीं है कि कहीं और पवित्रशास्त्र के आधार पर, ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें आपको कुछ करना होगा। लेकिन इसका मूल जोर बस यही है कि राय न बनाओ।

आलोचनात्मक मत बनो। तुम्हें उनसे प्यार करना चाहिए। अपवाद तो फिर दूसरी आयतों से निकलकर आते हैं।

अगर आप अपने भाई को ऐसा पाप करते हुए देखते हैं जो मौत की ओर नहीं ले जाता, तो उससे निपटें। और इसलिए, ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, मत्ती 18, अगर आपका भाई आपके खिलाफ़ पाप करता है, तो जाकर उसे दिखाएँ। अब, क्या यह आलोचनात्मक होना है? नहीं, यह ऐसी स्थिति है जहाँ आपका रिश्ता ऐसा है जहाँ आप किसी से भिड़ नहीं सकते, लेकिन उसके जीवन में जो कुछ आप देखते हैं उसके बारे में उससे बात करें, और अगर आप उनके साथ रिश्ते में हैं, तो यह वास्तव में कुछ अच्छा कर सकता है।

और इसलिए, अगर मैं सेठ से भिड़ जाता हूँ, तो इससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला है। अगर डेव अपने दोस्त से प्यार से बात करता है और किसी बात पर आँसू बहाता है, तो इससे फ़ायदा हो सकता है। और इसलिए, मुझे लगता है कि बॉयड ने यही कहा है।

मुझे लगता है कि मैथ्यू 18 और अन्य आयतें इसकी अनुमति देती हैं। मेरा मतलब है, व्याख्या 2 और 3 के बीच का अंतर यह है कि वे बहुत करीब हैं। वे स्पेक्ट्रम के एक ही छोर पर हैं।

तो, इसमें बहुत ज़्यादा अंतर नहीं है। बस मैंने पाया है कि अगर आप बाहर निकलते हैं, तो दरवाज़ा नियमित रूप से खुला रहता है, ठीक है, आप आलोचना न करें, लेकिन आप जानते हैं,

हमें वाकई फलों का निरीक्षक होना चाहिए, और लोग बस उसी पर टिके रहते हैं, और उसके साथ चलते हैं। इसलिए, यह कहना आसान है, देखो, बस ऐसा मत करो।

हममें से ज़्यादातर लोगों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि हम आलोचना करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। मेरा मतलब है, मेरा एक सबसे अच्छा दोस्त है, एड, जो मेरे साथ बीटी पर काम करता है। उसके शरीर में आलोचना करने की कोई हड्डी नहीं है।

वह नहीं जानता कि आलोचना कैसे की जाती है। और इसलिए, उसमें इस तरह की कोई प्रवृत्ति नहीं है, इसलिए, यदि यह आपका व्यक्तित्व है, तो यह शानदार है।

यह बहुत बढ़िया है। हममें से ज़्यादातर लोगों का व्यक्तित्व ऐसा नहीं होता। इसलिए, मैं कहूँगा, मेरे लिए, मैं बस यही कहूँगा, देखिए, मेरे जीवन का एक लक्ष्य यह है कि मैं लोगों के बारे में नकारात्मक राय नहीं बनाना चाहता।

मैं तुम्हें नहीं जानता। मैं तुम्हारी कहानी नहीं जानता। मैं तुम्हारी पिछली कहानी नहीं जानता।

मैं पर्याप्त नहीं जानता। मेरा काम कुछ करना नहीं है, बल्कि आपसे प्यार करना है। मुझे लगता है कि अगर आप जज शब्द के अर्थ को चरित्र के मूल्यांकन के इस विचार के लिए खुला छोड़ देते हैं, तो आप सकारात्मकता को खत्म कर रहे हैं।

इसमें कहा गया है, "किसी के बारे में राय मत बनाओ।" इसका मतलब है कि किसी एक के बारे में राय मत बनाओ। एक चीज़ को अच्छा और दूसरी को बुरा मत समझो।

मुझे इसमें कठिनाई है, और मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन वह उदाहरण यह है कि आपने हमें अपने मित्र के बारे में बताया है जो आलोचनात्मक भावना रखता है। और आपने, मेरी राय में, या मेरे अवलोकन में, उसकी आलोचनात्मक भावना का आलोचनात्मक रूप से आकलन किया है। और मुझे नहीं लगता कि हम व्यावहारिक आधार पर ऐसा करने से बच सकते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि इस न्याय न करने में कुछ गहरा है, इसलिए मेरा आकलन यह होगा कि हमें न्यायाधीश नहीं बनना है, न्यायाधीश के रूप में न्याय नहीं करना है, और निंदा करने में ईश्वर की भूमिका नहीं निभानी है। यह हम नहीं हैं, हम ऐसा नहीं करते हैं। हम ऐसा नहीं करते हैं।

यूहन्ना 7, यीशु का हमला, कहता है कि उसके व्यवहार का मूल्यांकन करने वालों की राय उसके पास है। और यूहन्ना 7:4 में कहता है, न्यायोचित न्याय करो। न्याय करते समय हमें क्या करना है, इसका संतुलन होना चाहिए ताकि हम एक परिभाषा पा सकें जो हमें यह कहने की अनुमति दे, "ऐसा मत करो।"

मेरी राय में, मैकनाइट का तर्क है कि इसका मतलब है निंदा न करना, किसी को स्वर्ग न भेजना और अंतिम न्यायाधीश की भूमिका स्वीकार न करना। यह हमारे लिए नहीं है। लेकिन इस दूसरे व्यवसाय के लिए, मुझे नहीं लगता कि आप व्यवहार का आकलन करने से कैसे बच सकते हैं।

यह या तो स्वीकृति देने या अस्वीकार करने वाली बात है, लेकिन यह पहचानें कि हमारी स्वीकृति या अस्वीकृति सीमित ज्ञान पर आधारित है और यह अंतिम नहीं हो सकती है और इसे अनुग्रह और दयालुता के साथ होना चाहिए। इसलिए, आप निंदात्मकता के साथ जाने वाले हैं। इसके खिलाफ तर्क यह है कि ये पैराग्राफ इसके बारे में नहीं हैं।

वह आगे बात करते हैं, आप देखिए, एक धब्बा और एक लट्टा, और ऐसी ही अन्य बातें, लेकिन हम अंतिम निर्णय के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम उस संबंधपरक प्रकार के लेन-देन के बारे में बात कर रहे हैं जो हमारे पास है। मेरा मतलब है, सोचिए कि कितने लोग ऐसा करते हैं, और। मैं गलत हो सकता हूँ, और आप सही हो सकते हैं; मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ।

मुझे नहीं लगता कि यह संदर्भ है। आप और मैं व्यक्तिगत रूप से कितने लोगों को इतनी अच्छी तरह से जानते हैं कि हम उनके पास जाकर उन्हें गले लगा सकें और कह सकें कि मुझे आपसे कुछ बात करनी है। देखिए, मुझे लगता है कि यह संख्या वास्तव में बहुत, बहुत छोटी है।

मुझे नहीं लगता कि रिश्तों की प्रकृति के हिसाब से इतने सारे लोग हैं। मेरा मतलब है, मेरे जीवन में ऐसे बहुत कम लोग हैं। और इसलिए यह एक छोटी सी बात है।

लेकिन निर्णय मत सुनाओ। यह निश्चित रूप से दोनों ही निंदात्मकता और इस दूसरे के अंतर्गत आएगा। इसलिए, आप इस बारे में स्कॉट को पढ़ना चाहेंगे।

मुझे वह नोट मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी कि भगवान हमारा न्याय कब करते हैं? और इसे सकारात्मक रूप से कहें। अगर हम आलोचना करने वाले लोग नहीं हैं, अगर हम न्याय करने वाले लोग नहीं हैं, तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या भगवान हमारे साथ अधिक धैर्यवान हैं। अगर हम दूसरों की आलोचना करते हैं, तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वह इस पर अधिक तेज़ी से निर्णय सुनाएंगे।

लेकिन अगर हम ऐसे लोग हैं जो वास्तव में एक दूसरे से प्यार करने की कोशिश करते हैं और केवल पाप का सामना करते हैं, चाहे आप इसे जिस भी तरह से कहें, तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या भगवान हमारे साथ अलग तरह से व्यवहार करते हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या भगवान हमारे पापों के साथ अधिक धैर्यवान हैं। मुझे नहीं पता।

परमेश्वर हम सभी का न्याय अपने अटल और अडिग न्याय और अपनी दया और कृपा के अटूट भंडार के अनुसार करेगा। किसी तरह, यह हमारे अंतिम निर्णय में महसूस किया जाएगा। तो, हाँ, मेरा मतलब है, यह वास्तव में बहुत कठिन है।

और क्योंकि मुझे लगता है कि हमारी प्राकृतिक प्रवृत्ति निर्णय पारित करने की है ताकि हम अपने बारे में बेहतर महसूस करें। मुझे लगता है कि हमें इस बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए। लेकिन आपको वही मानना होगा जो आप मानना चाहते हैं।

ठीक है, क्यों जज मत करो? क्योंकि तुम्हें ऐसा न करने को कहा गया है। क्यों जज मत करो? पारस्परिकता के सिद्धांत के कारण। तीसरा है जज मत करो।

और तीसरा कारण आयत 3-6 में लकड़ी के तिनके की बात है। तुम अपने भाई की आँख में चूरा क्यों देखते हो? ओह, यह दिलचस्प है। NIV ने कहा, भाई।

मुझे लगता है कि आप... मुझे आश्चर्य है कि यह भाई और बहन नहीं है। मैं इसका पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ। क्योंकि लगभग हर जगह भाई-बहन गायब हो गए हैं।

वैसे भी। तुम अपने भाई की आँख में पड़े चूरा को क्यों देखते हो और अपनी आँख में पड़े लट्टे पर ध्यान नहीं देते? वे सिर्फ़ तुम्हारी आँख से 2x4 के निकलने की बेतुकी तस्वीर पेश कर रहे हैं। तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो... और फिर, मुद्दा यह है कि हम वाचा समुदाय के बाहर के लोगों से इस तरह से संबंध नहीं रखते।

इस कमरे में हम इसी तरह से संबंध रखते हैं, हम वाचा में लोगों से इसी तरह से संबंध रखते हैं। तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, कि मैं तुम्हारी आँख से तिनका निकाल दूँ, जबकि तुम्हारी अपनी आँख में हमेशा लट्टा रहता है? अरे पाखंडी।

अभिनेता। सबसे पहले, अपनी आँख से लट्टा निकालो, और फिर तुम अपने भाई की आँख से तिनका निकालने के लिए स्पष्ट रूप से देख पाओगे। किसी और के जीवन में पाप की ओर इशारा करना बेतुका है, जबकि उसी समय, आप अपने स्वयं के पाप से अंधे हो गए हैं।

यही तो वह कह रहा है, है न? तो, पाप से निपटो, उस तख्ते से जो तुम्हारे अपने जीवन में है। यीशु स्पष्ट रूप से यह नहीं कह रहे हैं कि हमें कभी भी पाप की ओर इशारा नहीं करना चाहिए। इस अंश का पूरा मुद्दा यह है कि आपको सही स्थिति में होना चाहिए ताकि आप ऐसा कर सकें, इसलिए हम टेबल को इस तरह से बदल देंगे कि सेठ डेविड को एक तरफ़ खींच सके और उससे बात कर सके।

लेकिन अगर सेठ के जीवन में लगातार पाप हो रहा है, तो वह वास्तव में डेविड के जीवन में पाप को इंगित करने में सक्षम नहीं है। इसलिए, ऐसा करने से पहले, उसे अपने स्वयं के मुद्दों से निपटना होगा। और मुझे संदेह है कि जैसे-जैसे हम अपने जीवन में पाप करते हैं, हम उस धब्बे को अलग तरह से देखना शुरू कर देंगे।

शायद ज़्यादा धैर्य के साथ। शायद थोड़ी ज़्यादा ईमानदारी के साथ। लेकिन मुझे लगता है कि इस प्रक्रिया का एक हिस्सा यह है कि आप अपनी आँख में लगे लट्टे को हटा रहे हैं, और आप अपने जीवन में पाप से निपट रहे हैं ताकि आपको पाप के बारे में और भाई के जीवन में पाप से निपटने के तरीके के बारे में स्पष्ट समझ हो।

ठीक है, तो आमतौर पर, इस अंश का उपयोग यह कहने के लिए किया जाता है कि हम बिल्कुल भी न्याय नहीं कर सकते। और यह ऐसा नहीं कह रहा है। यह कह रहा है कि आपको प्लैंक से निपटने की ज़रूरत है और फिर आप दूसरे व्यक्ति के साथ काम करने में सक्षम होंगे।

मेरा अनुमान है कि शायद एक बार जब आप अपनी आँख में लगे लट्टे से निपट लेते हैं, तो दूसरे व्यक्ति के पाप से किसी न किसी कारण से निपटने की ज़रूरत नहीं होती। मुझे लगता है कि अपने पाप से निपटने की प्रक्रिया वास्तव में दूसरे लोगों के प्रति हमारे नज़रिए को बदल देती है। और निश्चित रूप से, हम उनके साथ कैसे काम करने जा रहे हैं।

ठीक है, फिर यीशु कुत्तों और सूअरों के बारे में बात करना शुरू करते हैं। और मुझे लगता है कि वह जो कर रहे हैं वह अति से बचाव है। वह अति से बचाव कर रहे हैं।

क्या यह सही शब्द है? वह चाहता है कि हम इस पूरी प्रक्रिया में समझदारी से काम लें। जब मैं शंघाई में था, तो मैंने एक गलती की थी, और मैंने किसी भी बात पर ज़ोर नहीं दिया था। वे वास्तव में इससे जूझ रहे थे।

यीशु लोगों को कुत्ते और सूअर नहीं कहते। जब मैंने पहली बार यह कहा, तो मुझे यकीन है कि यह मैं ही था; अनुवादक नहीं। हमने आधे घंटे तक इस बारे में बात की कि यीशु किसी को कुत्ता और सूअर क्यों कहते हैं। वे वास्तव में इस बात से बहुत परेशान थे।

और अंत में मैंने कहा, "ठीक है, मुझे बताने दीजिए..." और मैंने इसे फिर से कहा: यह एक सादृश्य है - एक रूपक या कुछ और।

और यह... वह लोगों को कुत्ते और सूअर नहीं कह रहा है। वह कह रहा है, उनके व्यवहार को देखो। और कुत्ते जंगली जानवर थे, है न? वे झुंड में भागते थे।

वे बहुत खतरनाक थे। और सूअर कोई पोर्की सूअर नहीं थे। सूअर जंगली थे।

वे डरावने थे। मेरे दोस्तों और मुझे बताया गया है कि वे जंगली सूअर का शिकार करते हैं... टेक्सास में आप जंगली सूअर का शिकार कहाँ करते हैं? क्या यह पूर्वी टेक्सास है? यह टेक्सास में कहीं है। जंगली... माफ़ करें? आप यहाँ उनका शिकार नहीं कर सकते? ठीक है, जंगली सूअर? जंगली सूअर क्या होता है? सिर्फ़ जंगली? ठीक है।

ओह. सच में? हाँ. ठीक है.

स्पोकेन में मेरा एक दोस्त है जो टेक्सास से है और उसे शिकार करना बहुत पसंद है। वह उन्हें जंगली सूअर कहता है, और उसे यह बहुत पसंद है क्योंकि यह बहुत खतरनाक है।

और यह बहुत करीब है... आप जानते हैं, अरे, अरे, बस इतना ही दोस्तों। यह वह सूअर नहीं है जिसके बारे में यीशु बात कर रहे हैं। यह पोर्की द पिग की एक भयानक नकल है, लेकिन आपको इसका विचार समझ आ गया होगा।

आप कुछ नहीं लेंगे... फुटबॉल के मैदान पर? वे टेक्सास विश्वविद्यालय के फुटबॉल मैदान पर जंगली सूअर का शिकार करते हैं? ओह। ओह, ओह, ओह। आपका हास्य बहुत सूक्ष्म है, और मैं इसे हमेशा नहीं समझ पाता।

ठीक है, तो जंगली सूअर जंगली सूअर हैं। हम दक्षिण में लाखों की संख्या में जंगली सूअरों की बात कर रहे हैं। दक्षिण में लाखों? वाह।

तो, यह यहाँ नीचे हिरण की तरह बुरा है, है ना? ठीक है। ठीक है। बढ़िया।

आप कभी भी कोई ऐसी चीज़ नहीं लेंगे जो पवित्र हो, कोई ऐसी चीज़ जो भगवान को समर्पित हो, और उसे जंगली कुत्तों के झुंड को न दें। आप कभी भी मोती जैसी कोई कीमती चीज़ नहीं लेंगे और उसे जंगली सूअर, जंगली सूअर को न दें। क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे, तो क्या होगा? खैर, वे बदल जाएँगे।

वे उन्हें रौंदने जा रहे हैं, जिसका मतलब शायद मोती है। वे उन्हें अपने पैरों तले रौंद सकते हैं और आपको मोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं। कुछ लोग हैं जो सोचते हैं कि रौंदना सूअरों का काम है और मोड़कर फाड़ना कुत्तों का काम है।

ग्रीक में ऐसा कुछ भी नहीं है, लेकिन माउंस अनुवाद में, यह एक तरह का मूर्खतापूर्ण नाम है, लेकिन इसे यही कहा जाता है; हमने कहा कि अन्यथा, सूअर उन्हें अपने पैरों तले रौंद सकते हैं, और कुत्ते आपको टुकड़े-टुकड़े कर सकते हैं। किसी भी तरह से, किसी ऐसी चीज़ को लेना जो कीमती है और उसे किसी ऐसी चीज़ को देना जो उसे नष्ट करने जा रही है, मूर्खतापूर्ण होगा। सही? तो, मुद्दा यह है कि, आप इस बारे में क्यों बात कर रहे हैं, यीशु? और इसका उत्तर यह है कि, हमने अभी-अभी अपनी आँखों में लगे तख्ते को हटाने के बारे में बात की है ताकि आप अपने भाई की आँख में पाप के कण को स्पष्ट रूप से देख सकें।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपको हर समय ऐसा करना होगा। ऐसे लोग हैं जिनकी आँखों में पाप का एक छोटा सा कण भी है। और उसे दिखाने की कोशिश करना उतना ही मूर्खतापूर्ण होगा जितना कुत्तों को पवित्र वस्तुएँ और सूअरों को मोती देना।

इसलिए, विवेकशील बनने का आह्वान करें। आलोचनात्मक बनने का नहीं। विवेकशील बनने का आह्वान करें।

ऐसे समय होते हैं जब आप यीशु की कही हुई बात मानते हैं, लेकिन इस मामले में ज़्यादा ज़ोर देकर कहें तो ऐसे समय भी होते हैं जब आप ऐसा नहीं करते। ऐसे समय भी होते हैं जब आप ऐसा नहीं करते। हालाँकि, इस प्रक्रिया में आपको यह तय करना होगा कि कौन कुत्ते की तरह व्यवहार कर रहा है और कौन सूअर की तरह।

और यह एक विवेकशील या न्यायपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा आप व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन करते हैं ताकि आप इस निर्देश का पालन कर सकें। मैं उस प्रक्रिया के लिए न्यायपूर्ण

शब्द का उपयोग कभी नहीं करूँगा क्योंकि यीशु ने कहा था कि ऐसा मत करो। शब्दों के साथ खेले बिना।

मुझे पता है कि आप नहीं हैं। लेकिन शब्दों के साथ खेलने के बिना, हमें करना ही होगा, चाहे वे कोई भी स्थिति क्यों न लें, उन सभी को एक विवेकशील भावना की आवश्यकता होती है ताकि आप जान सकें कि कब क्या करना है और कब नहीं करना है। लेकिन मैं यह मानना चाहूँगा कि डेव, जब सेठ डेव को देख रहा है और विवेकशील होने की कोशिश कर रहा है, तो यह कोई निर्णयात्मक बात नहीं है।

इसका मतलब है कि क्या इस बारे में बात करना सही है? क्या हम इस बारे में बात करने के लिए सही रिश्ते में हैं? क्या इस बारे में बात करने का यह सही समय है? ठीक है। हम सभी सहमत हैं कि इसके लिए समझदारी की आवश्यकता है और यह हम सभी के लिए ज़रूरी है। आलोचनात्मक, निर्णयात्मक भावना कभी भी सही नहीं होती।

और फिर, हम सभी इस बात पर सहमत होंगे। निर्णयात्मक, आलोचनात्मक भावना। तो, यह एक कठिन सवाल है।

यह कठिन है। और फिर से, मेरा प्रोत्साहन यह है कि हम स्वाभाविक रूप से आलोचनात्मक होने की ओर बढ़ते हैं। हम स्वाभाविक रूप से, जब तक कि आप एड नहीं हैं, हम स्वाभाविक रूप से आलोचनात्मक होने की ओर बढ़ते हैं।

और मुझे लगता है कि हमें बहुत सुरक्षित रहना चाहिए। बेशक, मैं टकराव से दूर रहने वाला व्यक्ति हूँ। इसलिए, मेरे मन में, मैं कह सकता हूँ, ओह, अभी सही समय नहीं है।

अभी सही जगह नहीं है। दस साल बाद। अभी सही समय नहीं है।

आप जानते हैं, मेरा मतलब है, तो, आप जानते हैं, यह कठिन है। यह एक कठिन बात है। और यह ऐसी चीज़ है जिससे हम सभी को जूझना पड़ता है।

निषेध के विरुद्ध, निंदात्मकता के विरुद्ध, पहले खुद को देखने का आरोप, लोगों को पूरी तरह से विवेकहीन बना सकता है और कभी भी धब्बे से निपटने के लिए प्रेरित कर सकता है। और इसलिए, वह लोगों को कुत्ते और सूअर नहीं कह रहा है। वह तुलना कर रहा है।

और मुद्दा यह है कि कुछ लोग कुछ परिस्थितियों में, कुछ समय में ऐसे होते हैं जहाँ हमें पीछे हटने और बस यह कहने की आज़ादी होती है कि, अभी नहीं। या, मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ। ठीक है? हाँ, सर।

इसका व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। हाँ। और वह इसे कुत्तों और सूअरों के रूप में व्याख्या करने में सक्षम था जो अन्यजातियों को संदर्भित करता है।

हाँ। यीशु यहाँ अपने कई शिष्यों के लिए, उन गैरयहूदियों को सुसमाचार सुनाने के लिए हैं जो पुनरुत्थान के बाद जाते हैं। हाँ।

यह एक अजीब बयान है, है न? मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मुझे नहीं लगता कि जब लोग बोलते हैं, तो चीजें आपस में जुड़ी होती हैं। जब तक आप किसी बड़े सेक्शन या शिफ्ट में नहीं होते, मुझे लगता है कि चीजें आपस में जुड़ी होती हैं।

विचार आपस में जुड़े हुए हैं। आपके पास स्पर्शखाँ और अन्य चीजें हो सकती हैं, लेकिन वे आपस में जुड़े हुए हैं। और इसलिए, मेरी व्याख्यात्मक प्राथमिकता हमेशा कनेक्शन देखना है, क्योंकि मुझे लगता है कि लोग इसी तरह बात करते हैं।

इसलिए, मेरे मन में इसके खिलाफ़ एक पूर्वाग्रह है, लेकिन मैं नहीं जानता कि फिर से सुसमाचार प्रचार न करने के बारे में चर्चा क्यों हो रही है, जिसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, या फिर यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि ऐसा मत करो जबकि वह खुद ऐसा कर रहे थे। मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। हो सकता है कि आपने माउंट पर उपदेश पर अन्य पुस्तकें नहीं पढ़ी हों, लेकिन मैंने इन दोनों को इसलिए चुना क्योंकि वे बहुत अलग हैं।

क्या वे मददगार रहे हैं? या आप मुझे कोई दूसरी पाठ्यपुस्तक खोजने के लिए प्रोत्साहित करेंगे? क्या? मुझे लगता है कि वे मददगार रहे। मैं मान रहा हूँ कि आप सभी को कोरल पसंद है। मैंने उसका नाम भी सही कहा, है न? मैं इसका अभ्यास कर रहा हूँ।

मैं सारी रात जागता रहा हूँ। कोरल। कोरल।

ठीक है, आप सभी, वह था... मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि शुरुआत धीमी है, लेकिन... एक लेखक दूसरे से असहमत है। कोरल। हाँ, कोरल।

ठीक है। मेरा मतलब है, नाइट की किताब में बहुत सारी अच्छी बातें हैं, बहुत सारी ऐसी बातें हैं जिनसे मैं असहमत हूँ। वह चीज़ों को अलग नज़रिए से देखता है।

कितने लोग मुझे स्कॉट की किताब का इस्तेमाल जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे? कोरल के साथ-साथ। कितने लोग मुझे कुछ और खोजने के लिए प्रोत्साहित करेंगे? नहीं, लेकिन मैं इसका इस्तेमाल नहीं करूँगा। मैं वीडियो पर हूँ, मैं नहीं कर सकता।

हम इसे संपादित कर सकते हैं। मुझे लगता है कि इसमें से ज़्यादातर को संपादित करने की ज़रूरत है। दरअसल, चूँकि मैं ही संपादन कर रहा हूँ, इसलिए नए व्याख्यान के लिए ब्रेक लें, बिल।

ठीक है, ठीक है। ठीक है, मेरा मतलब है, कार्सन की माउंट पर उपदेश पर छोटी सी किताब बहुत अच्छी है, लेकिन यह बहुत, बहुत छोटी है। गुलिक जैसी कुछ पुरानी किताबें भी अच्छी हैं, लेकिन वे ज़्यादा व्याख्यात्मक हैं, और मैं सिर्फ़ दो समानांतर किताबें नहीं बनाना चाहता था।

ठीक है, मुझे खुशी है कि कुल मिलाकर आप हैं, और आपको यह पसंद है। हाँ, और इसलिए, ठीक है, इससे मदद मिलती है, इससे मदद मिलती है। मैं देखता रहूँगा, लेकिन यह... हाँ, हाँ।

हाँ, हम नहीं करते... अर्थ और अर्थ, आपको यह पहचानना होगा कि न्यायाधीश का एक अर्थ होता है, और फिर अर्थ होते हैं, और आप अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं जबकि, आप नहीं कर सकते... मुझे नहीं लगता कि आप यह कहना चाहते हैं कि मैथ्यू 7:1 में यीशु ने जो कहा है, हमें कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसने कहा... और मैंने ऐसा नहीं कहा। मैंने कहा कि दुर्लभ और कुछ अपवाद हैं, हाँ। लेकिन फिर यीशु ने जॉन 7:24 में क्या कहा, जहाँ वह न्यायपूर्ण निर्णय का न्याय करने के लिए ठीक उन्हीं तीन शब्दों का उपयोग करता है, कि हम ऐसा नहीं करते हैं।

हाँ, मैं समझ गया। आपने अपनी बात कह दी है। और मैं अर्थ और अर्थ के बीच का अंतर जानता हूँ।

मुझे पता है कि आप ऐसा करते हैं, लेकिन मैं यही कोशिश कर रहा हूँ... मुझे लगता है कि हम किसी चीज़ के इस अर्थ के साथ लेबल लगा रहे हैं जो ऐसा लग सकता है कि हम एक अर्थ स्थापित कर रहे हैं। समझने के लिए ग्रीक शब्द क्या है? खैर, यह शब्द है... मुझे इसे जाँचने दें। हाँ, यह न्याय करने के लिए एक मानक शब्द है।

और इसलिए, मैं लोगों के बारे में निर्णयात्मक भावना और किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में कुछ समझने की ज़रूरत के बीच अंतर पैदा करने के लिए विवेक का उपयोग कर रहा हूँ जिसके साथ आप रिश्ते में हैं। ग्रीक शब्द क्या है? मुझे नहीं पता... मुझे यकीन है कि विवेक के लिए एक ग्रीक शब्द है। मुझे नहीं पता कि यह क्या होगा।

यह शब्द जज है। लेकिन मुझे लगता है कि इसे लॉग में मौजूद धब्बे से परिभाषित किया जाता है। तो... आपने कहा कि मुझे अपना मन बनाना होगा।

वहाँ कुछ स्थितियाँ हैं। और... प्रश्नकर्ता 2 तो, कुछ मायनों में, यह न्याय, वह कहता है कि न्याय मत करो, क्योंकि तुम्हारा भी न्याय किया जाएगा। खैर, हम जानते हैं कि हमारा न्याय भगवान द्वारा किया जाएगा।

लेकिन ऐसा नहीं है, अरे, आप दूसरों का न्याय नहीं करते। आपको न्याय किया जाना चाहिए। तो क्या यह हो सकता है, आप सही ढंग से, इस एक और इस युग का न्याय भगवान द्वारा करते हैं? क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि आपको दूसरों द्वारा न्याय किया जाएगा? उसी तरह जैसे आप लोगों का न्याय करते हैं... हाँ, मुझे लगता है कि कई परतें हैं। संबंधात्मक रूप से, अगर हम आलोचनात्मक लोग हैं, तो लोग भी आलोचनात्मक होंगे।

अगर हम आलोचनात्मक लोग हैं, तो परमेश्वर हमारा न्याय करेगा और वह हमें परिणामों की अनुमति देगा। इसी तरह से उसने दुनिया बनाई है। वह पाप अपने आप वापस आता है और आपको नीचे खींचता है।

तो फिर, क्या आप कह रहे हैं कि इसका बहुत अर्थ है? मुझे लगता है कि पहाड़ी उपदेश के बहुत से अर्थ कई स्तरों पर हैं। और क्या आपको लगता है कि रोमियों 2 में सभी ने इसका एक ही तरह से इस्तेमाल किया है? जहाँ वह कहता है कि बहुत सारे बहाने हैं। अरे यार, तुम जो भी हो, तुम्हें दूसरों द्वारा आंका जाएगा।

यह एक आदर्श उदाहरण है जिस पर हम दोनों सहमत होंगे। रोमियों 2 में, आप यहूदियों को अन्यजातियों पर निर्णय सुनाते हुए पाते हैं, भले ही यहूदी बिल्कुल वही काम कर रहे हों, लेकिन वे सोचते हैं कि चूँकि वे यहूदी हैं, इसलिए उन्हें इसके लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा। रोमियों 2 में यही तर्क दिया गया है। ओह, डेविड को यह पसंद आएगा।

लेकिन शब्दों में कोई सीमा नहीं है। दूसरे शब्दों में, कुत्ते और सूअर फरीसी हैं। लेकिन यहाँ भाई भी हैं।

लट्टा और चितकबरा भाई हैं, है न? तो, अगर आप श्लोक 1 को श्लोक 3 के हिस्से के रूप में पढ़ना चाहते हैं, तो इसका संदर्भ आस्था के समुदाय के भीतर है। हाँ, कुल मिलाकर, उन्होंने इस अवधारणा को विकसित नहीं किया था कि, मैं वास्तव में एक यहूदी हूँ, और आप नहीं हैं क्योंकि आप अभी भी शारीरिक रूप से अब्राहम के वंशज हैं। मेरा मतलब है, उनमें से कुछ थे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह बहुमत की स्थिति थी।

हाँ। यह सिर्फ इतना है कि यह इतना सार्वभौमिक रूप से कहा गया है कि यह निश्चित रूप से इसका अनुप्रयोग होगा। फरीसियों ने निश्चित रूप से उन लोगों की निंदा की जिन्होंने कानून की उनकी व्याख्या का पालन नहीं किया।

इसके पहले या बाद में ऐसा कुछ नहीं है जो इसे विशेष रूप से उस संदर्भ में ले जाए। यह होगा... मेरा अनुमान है, जैसा कि वह कह रहा था, शिष्य इसे एक आवेदन के रूप में सोच रहे होंगे, लेकिन यह कई अनुप्रयोगों में से एक होगा। मैं गैर-न्यायाधीश के अपवाद के बारे में अधिक सोच रहा हूँ, जो किसी के साथ आपके करीबी रिश्ते पर आधारित होगा।

मैं शायद श्लोक 2 के अंतिम आधे भाग के बारे में सोच रहा हूँ, जहाँ वह उसी तरह कहता है जैसे जज इलियट को जज के आने की ज़रूरत थी। मैं यह सोचने से खुद को नहीं रोक पा रहा हूँ कि क्या इसमें कोई संबंधपरक संबंध है। क्या आप इसे थोड़ा और आगे बढ़ा सकते हैं? उदाहरण के लिए, माता-पिता का अपने बच्चों पर एक निश्चित नियंत्रण या अधिकार होता है जिसके लिए एक स्तर के निर्णय की आवश्यकता होती है।

और फिर हम न्याय के लिए परमेश्वर के सामने खड़े होते हैं। जाहिर है कि उसका हम पर अधिकार है। हाँ, यह उस पर लागू नहीं होता।

यह बात उस पर लागू नहीं होती। नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। उसकी आँख में कोई धब्बा नहीं है।

मुझे नहीं लगता कि यह ईश्वर पर बिल्कुल भी लागू होगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह एक दैवीय निष्क्रियता है। और इसलिए, ईश्वर ही वह है जो न्याय लौटा रहा है। और मैंने इसका उल्लेख जल्दी ही कर दिया, लेकिन मुझे यह पहले ही कह देना चाहिए था।

प्रेरितिक पद के बारे में मेरा दृष्टिकोण, मुझे नहीं लगता कि इसे दोहराया गया है। मुझे लगता है कि यह एक ऐसा उपहार है जो अब मौजूद नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह किसी अन्य उपहार के बारे में सच है, लेकिन मुझे लगता है कि प्रेरित की परिभाषा पहली शताब्दी तक ही सीमित है।

और मुझे लगता है कि प्रेरित ऐसे काम कर सकते थे जो मैं नहीं कर सकता। प्रेरित ऐसे काम कर सकते थे जो अब पवित्रशास्त्र में अनिवार्य हैं, लेकिन परमेश्वर के साथ उनके रिश्ते और उनके द्वारा किए जाने वाले कामों के पीछे ईश्वरीय अधिकार के साथ एक भविष्यवक्ता की आवाज़ के रूप में, मुझे लगता है कि पॉल ऐसे काम कर सकते थे जो मैं नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, मैं अपने चर्च को पत्र लिखकर किसी ऐसे व्यक्ति को चर्च से बाहर नहीं निकाल सकता जो मुझे लगता है कि पाप में जी रहा है।

या इससे भी बदतर, 2 थिस्सलुनीकियों में, वह लोगों को चर्च से बाहर निकाल रहा है क्योंकि वे आलसी हैं। मैं कभी नहीं समझ पाऊंगा कि किसी अन्य व्यक्ति को ऐसा करने का अधिकार है। इसलिए, मुझे लगता है कि परमेश्वर के अपने नियम हैं, और मुझे लगता है कि प्रेरितों के पास एक असाधारण मामला है।

अगर इससे उस अंतर को समझने में मदद मिलती है। 1 थिस्सलुनीकियों 5 में, पॉल खुद, मुझे लगता है, उस व्यक्ति को लात नहीं मार रहा है, उसे बहिष्कृत नहीं कर रहा है, बल्कि मांग कर रहा है कि चर्च का विरोध किया जाए। हाँ, ठीक है।

उन्होंने एक निर्णय लिया है। उन्होंने निर्णय पारित कर दिया है। और वे उम्मीद करते हैं कि चर्च उस पर अमल करेगा।

और ऐसा करके, उसके निर्णय से सहमत होना। क्या यह कहना उचित है? ओह, ठीक है, मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि वह उनसे वही करने के लिए कह रहा है जो उन्हें बताया गया है।

मैं गलत भी हो सकता हूँ। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। मैं आपके साथ हूँ और मौजूद हूँ।

इस तरह से तुम्हारे साथ उपस्थित होने के नाते, मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर पहले ही निर्णय पारित कर दिया है। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो यह कर रहा हूँ। इसलिए, जब तुम इकट्ठे हो, और मैं आत्मा में तुम्हारे साथ हूँ, और प्रभु यीशु की शक्ति मौजूद है, तो इस आदमी को शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंप दो ताकि प्रभु के दिन उसकी आत्मा बच सके।

हाँ, मुझे यकीन नहीं है कि वह अनुपालन से ज़्यादा कुछ माँग रहा है। ठीक है, बात तो सही है, लेकिन फिर मसीह खुद कहते हैं, वे आज आपकी आज्ञादी छीनने के लिए आपके पास आए हैं। लेकिन फिर ऐसा लगता है कि वह आपको चर्च दे रहे हैं।

आप जानते हैं, यह एक अच्छी बात है कि चर्च अनुशासन का अंतिम भाग यह है कि चर्च एक पूरे के रूप में न्याय करता है, आप जो भी शब्द इस्तेमाल करना चाहते हैं। हाँ, यह एक बहुत अच्छी बात है। मैं यह सोचने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह कहाँ है... मुझे याद नहीं है कि बॉयड ने कभी इस बारे में बात की हो, लेकिन यह वास्तव में एक तीसरी श्रेणी है जहाँ कोई भी व्यक्ति एक व्यक्ति नहीं है।

और मैं जानता हूँ कि कुछ पादरी ऐसे हैं जो सोचते हैं कि वे दुनिया के लिए ईश्वर का उपहार हैं और वे यह कार्य कर सकते हैं। वे किसी पर निर्णय दे सकते हैं। लेकिन यह चर्च का कार्य है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप 1 तीमुथियुस 5 के साथ क्या करते हैं, और सर्वनाम भ्रामक हैं।

पाप करने वाले बुजुर्ग को सबके सामने डाँटें ताकि बाकी लोग डर जाएँ। ये सब अभी भी सामुदायिक न्याय के कार्य हैं। मुझे लगता है कि अगर बॉयड यहाँ होते और हम उनसे इस बारे में पूछते, तो वे कहते, आप इसका आनंद नहीं ले सकते।

आप ऐसा खुद को दूसरे व्यक्ति से बेहतर महसूस कराने के लिए नहीं कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वे सभी योग्यताएँ अभी भी लागू होंगी, लेकिन शायद यह मेरे नोट्स में जोड़ने के लिए एक अच्छी तीसरी श्रेणी है। कि कॉर्पोरेट निर्णय के लिए एक जगह है।

क्या यह आप सभी के लिए समझ में आता है? श्रोतागण मुझे लगता है कि कॉर्पोरेट निर्णय इसलिए है क्योंकि कॉर्पोरेट मसीह के शरीर के रूप में खड़ा है, और इसलिए चर्च के स्थान पर खड़ा है। 1 तीमुथियुस 5 के साथ, मुझे लगता है कि 1 तीमुथियुस 6 में टिप्पणीकार को चर्च के बारे में विस्तार से बताने में सारा समय बिताना होगा और वे चर्च क्यों नहीं हैं, मुझे लगता है कि यह एक अच्छा स्पष्टीकरण है।

यह डॉ. बिल मौंस द्वारा माउंट पर उपदेश पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, मैथ्यू 7:1-6 है। न्याय न करें।